आदम की कहानी (5 का भाग 1): पहला इंसान

रेटिंग: TOP20

विवरण:

श्रेणी: लेख इस्लाम की मान्यताएं पैगंबरों की कहानियां

द्वारा: Aisha Stacey (© 2008 IslamReligion.com)

पर प्रकाशित: 04 Nov 2021

अंतिम बार संशोधित: 04 Nov 2021

इस्लाम हमें आदम [1] की रचना का आश्चर्यजनक विवरण देता है। ईसाई और यहूदी दोनों परंपराएं कम विस्तृत हैं लेकिन उल्लेखनीय रूप से क़ुरआन के समान हैं। उत्पत्ति की पुस्तक आदम को "पृथ्वी की धूल" से बने होने के रूप में वर्णित करती है और तल्मूड में आदम को कीचड़ से गूंथने के रूप में वर्णित किया गया है।

और ईश्वर ने स्वर्गदूतों से कहा:

"वास्तव में, मैं मानवजाति को पीढ़ी-दर-पीढ़ी पृथ्वी पर रखने जा रहा हूं।' क्या तू उसमें उसे बनायेग, जो उसमें उपद्रव करेगा तथा रक्त बहायेगा? जबकि हम तेरी प्रशंसा के साथ तेरे गुण और पवित्रता का गान करते हैं! ईश्वर ने कहाः जो मैं जानता हूं, वह तुम नहीं जानते।'" (क़ुरआन 2:30)

तो शुरू करते हैं पहले आदमी, पहले इंसान आदम की कहानी। ईश्वर ने आदम को मुट्ठी भर मिट्टी से बनाया जिसमें पृथ्वी पर उसकी सभी किस्मों के अंश थे। आदम को बनाने वाली मिट्टी को इकट्ठा करने के लिए स्वर्गदूतों को धरती पर भेजा गया था। यह लाल, सफेद, भूरा और काला था; यह नरम और लचीला, कठोर और करिकरि था; वह पहाड़ों और घाटियों से आया है; बांझ रेगिस्तानों और हरे भरे उपजाऊ मैदानों और बीच की सभी प्राकृतिक किस्मों से। आदम के वंशजों को मुट्ठी भर मिट्टी की तरह विविधितापूर्ण होना तय था, जिससे उनके वंश को बनाया गया; सभी के अलग-अलग रूप, आचरण और गुण हैं।

मिट्टी या चिकनी मिट्टी

पूरे क़ुरआन में आदम को बनाने के लिए इस्तेमाल की गई मिट्टी को कई नामों से जाना जाता है, और इससे हम उसकी रचना की कुछ कार्यप्रणाली को समझ सकते हैं। आदम की सृष्टि के अलग-अलग चरणों में मिट्टी के लिए हर नाम का इस्तेमाल किया जाता है। पृथ्वी से ली गई मिट्टी को मिट्टी कहा जाता है; ईश्वर भी इसे मिट्टी के रूप में संदर्भित करता है। जब इसे पानी में मिलाया जाता है तो यह कीचड़ बन जाता है, जब इसे ऐसे ही छोड़ दिया जाता है तो पानी की मात्रा कम हो जाती है और यह चिपचिपी मिट्टी (या कीचड़) बन जाता है। अगर इसे फिर से कुछ समय के लिए छोड़ दिया जाए तो इसमें से बदबू आने लगती है और रंग गहरा हो जाता है - जैसे:- काली और चिकनी मिट्टी। इस पदार्थ से ही ईश्वर ने आदम के रूप को ढाला। उनके निर्जीव शरीर को सूखने के लिए छोड़ दिया गया, और यह वह बन गया जिसे क़ुरआन में बजने वाली चिकनी मिट्टी के रूप में जाना जाता है। आदम को कुम्हार की मिट्टी के जैसी मिट्टी से ढाला गया था। जब इस पर थपकी दी जाती है तो इसमें बजने वाली आवाज निकलती है।[2]

पहला आदमी का सम्मान किया गया

और ईश्वर ने स्वर्गदूतों से कहा:

"जबकि कहा आपके पालनहार ने स्वर्गदूतों सेः मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य, मिट्टी से। तो जब मैं उसे बराबर कर दूं तथा फूंक दूं उसमें अपनी ओर से रूह (प्राण), तो गिर जाओ उसके लिए सज्दा करते हुए।'' (क़ुरआन 38:71-72)

ईश्वर ने पहले मनुष्य, आदम को अनगिनत तरीकों से सम्मानित किया। ईश्वर ने अपनी आत्मा को उसमें डाल दिया, उसने उसे अपने हाथों से बनाया और उसने स्वर्गदूतों को उसके सामने झुकने का आदेश दिया और ईश्वर ने स्वर्गदूतों से कहा:

“....आदम को सज्दा करो, तो इब्लीस के सिवा सबने सज्दा किया।..." (क़ुरआन 7:11)

जबकि पूजा सिर्फ ईश्वर के लिए है, स्वर्गदूतों द्वारा आदम को साष्टांग करना सम्मान का प्रतीक था। ऐसा कहा जाता है कि, जैसे ही आदम के शरीर में जीवन आया, वह छींका और तुरंत कहा, 'सभी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर के लिए हैं;' इसलिए ईश्वर ने इसका जवाब आदम पर अपनी दया दिखा के किया। हालांकि इस बात का उल्लेख क़ुरआन या पैगंबर मुहम्मद (ईश्वर की दया और कृपा उन पर बनी रहे) के प्रामाणिक कथनों में नहीं किया गया है, क़ुरआन की कुछ टिप्पणियों में इसका उल्लेख है। इस प्रकार, अपने जीवन के पहले क्षण में, पहले व्यक्ति को एक सम्मानित प्राणी के रूप में पहचाना जाता है, जो ईश्वर की अनंत दया से आच्छादित है।[3]

पैगंबर मुहम्मद ने यह भी कहा था कि ईश्वर ने आदम को अपनी छवि में बनाया था।[4] इसका मतलब यह नहीं है कि आदम को ईश्वर के समान दिखने के लिए बनाया गया था, क्योंकि ईश्वर अपने सभी पहलुओं में अद्वितीय हैं, हम उनकी छवि को समझने या बनाने में असमर्थ हैं। हालाँकि, इसका अर्थ यह है कि आदम को कुछ ऐसे गुण दिए गए थे, जो ईश्वर के पास भी हैं, हालांकि ईश्वर के गुण अतुलनीय हैं। उन्हें दया, प्रेम, स्वतंत्र इच्छा और अन्य के गुण दिए गए थे।

पहला अभिवादन

आदम को निर्देश दिया गया था कि वह अपने पास बैठे स्वर्गदूतों के एक समूह से संपर्क करें और अस्सलामु अलैकुम (ईश्वर की शांति आप पर हो) शब्दों के साथ उनका अभिवादन करें, उन्होंने उत्तर दिया 'और आप पर भी ईश्वर की शांति, दया और आशीर्वाद हो। उस दिन से ये शब्द उन लोगों का अभिवादन बन गए, जो ईश्वर को समर्पित थे। आदम की बनने के समय से, उसके वंशजों अर्थात हम लोगो को शांति फैलाने का निर्देश दिया गया था।

देख भाल करने वाला आदम

ईश्वर ने मानवजाति से कहा कि उसने उन्हें नहीं बनाया सिवाय इसके कि वे उसकी पूजा करें। इस दुनिया में सब कुछ आदम और उसके वंशजों के लिए बनाया गया था, ताकि हमें ईश्वर की पूजा करने और जानने की हमारी क्षमता में सहायता मिल सके। ईश्वर की अनंत बुद्धि के कारण, आदम और उसके वंशजों को पृथ्वी पर कार्यवाहक होना था, इसलिए ईश्वर ने आदम को वह सिखाया जो उसे इस कर्तव्य को निभाने के लिए जानना आवश्यक था। ईश्वर कहता है:

"उसने आदम को सभी नाम सिखा दिये।" (क़ुरआन 2:31)

ईश्वर ने आदम को हर चीज को पहचानने और नाम निर्दिष्ट करने की क्षमता दी; उन्होंने उसे भाषा, भाषण और संवाद करने की क्षमता सिखाई। ईश्वर ने आदम को ज्ञान की अतृप्त आवश्यकता और प्रेम से भर दिया। आदम ने उन सभी बातों के नाम और उपयोग सीख लिए थे, जो ईश्वर ने स्वर्गदूतों से कहे थे।..

"मुझे इनके नाम बताओ, यदि तुम सच्चे हो! सबने कहाः तू पवित्र है। हम तो उतना ही जानते हैं, जितना तूने हमें सिखाया है। वास्तव में, तू अति ज्ञानी तत्वज्ञ है।'' (क़ुरआन 2:31-32)

ईश्वर ने आदम की ओर रुख किया और कहा:

"'हे आदम! इन्हें इनके नाम बताओ और आदम ने जब उनके नाम बता दिये, तो ईश्वर ने कहाः क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं आकाशों तथा धरती की छुपी हुई बातों को जानता हूं तथा तुम जो बोलते और मन में रखते हो, सब जानता हूं?" (क़ुरआन 2:33)

आदम ने स्वर्गदूतों से बात करने की कोशिश की, लेकिन वे ईश्वर की आराधना करने में व्यस्त थे। स्वर्गदूतों को कोई विशिष्ट ज्ञान या इच्छा की स्वतंत्रता नहीं दी गई थी, उनका एकमात्र उद्देश्य ईश्वर की पूजा और स्तुति करना था। दूसरी ओर, आदम को तर्क करने, चुनाव करने और वस्तुओं और उनके उद्देश्य की पहचान करने की क्षमता दी गई थी। इसने आदम को पृथ्वी पर आने वाली भूमिका के लिए तैयार करने में मदद की। इसलिए आदम हर चीज़ के नाम जानता था, लेकिन वह स्वर्ग में अकेला था। एक सुबह आदम उठे और देखा कि एक औरत उन्हें देख रही है।[5]

फुटनोट:

[1] अल इमाम इब्न कथीर के काम के आधार पर, द स्टोरीज ऑफ़ द प्रोफेट्स।

[2] सहीह अल बुखारी

[3] अल इमाम इब्न कथीर। द स्टोरीज ऑफ़ द प्रोफेट्स।

[4] सहीह मुस्लिम

[5] इब्न कथीर।

इस लेख का वेब पता:

https://www.islamreligion.com/hi/articles/1190

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।